पवन प्रवाह
लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
e-mail-pawanprawah@gmail.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17
मूल्य : तीन रुपये पृष्ठ-16
वर्ष 03 अंक 12 लखनऊ। सोमवार 12 से 18 दिसम्बर-2016



www.pawanprawah.com
e-mail-pawanprawah@gmail.com
पवन प्रवाह

# 'पृथ्वी की घूर्णन गति हुई धीमी और अस्तित्व को खतरा'

**लेखक डॉ. भरत राज सिंह**
**स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं**

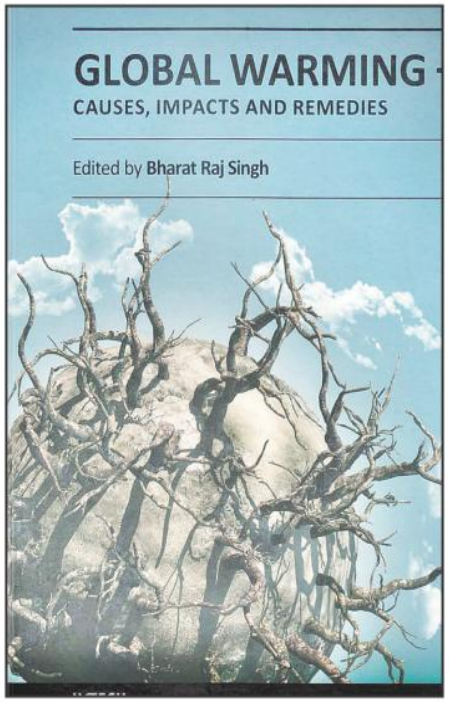


विश्व के सभी वैज्ञानिक एवं बुद्धिजीवी यह मान चुके है कि हमारी अनदेखी और गलतियों के कारण ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन का खतरा सम्पूर्ण विश्व एवं मानव जाति के अस्तित्व पर मंडरा रहा है। ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन से न केवल जलवायु परिवर्तन, वातावरण एवं समुद्र के जल स्तर को प्रभावित कर रहा है, बल्कि यह हमारी सम्पूर्ण पृथ्वी के भूविज्ञान को बदल कर रख देगा।

डॉ. भरत बताते हैं कि ग्लोबल वार्मिंग अर्थात वैश्विक तापमान में 2 डिग्री सेन्ट्रीग्रेड तापमान की वृद्धि के कारण उत्तरी ध्रुव पर जमी हुयी बर्फ के पिघलने एवं ग्लेशियरों के सिकुड़ने के कारण तूफान व जलप्लावन का खतरा बढ़ता जा रहा है तथा अमेरिका, कनाडा व इंग्लैण्ड आदि देशों के प्रमुख तटीय शहर समुद्र में डूबने की आशंका है। इसके साथ ही इनके समुद्री क्षेत्रों के आस-पास भारी बर्फबारी होगी एवं नए ग्लेशियरों का निर्माण होगा। इसके कारण इन शहरों में रहने वाली आबादी को कहीं अन्यत्र विस्थापित करना पड़ेगा। प्रो. सिंह की राय के अनुसार, सम्पूर्ण विश्व की ध्रुवीय हिम चट्टानों के पिघलने से 2040 तक उत्तरी ध्रुव पर नाम मात्र की बर्फ बचेगी। नेचर साइन्स पत्रिका एवं अन्य सर्वे की माने तो विश्व के 99.5% ग्लेशिअर केवल अन्टार्कटिक व ग्रीन लैण्ड में हीं हैं, जो कि यदि पिघल जाएं तो समुद्र के जल स्तर में 63 मीटर या 200 फिट की बढ़ोत्तरी कर सकता है।

अप्रैल 2003 से अप्रैल 2012 तक के आंकड़ों की समीक्षा के अनुसार आर्कटिक क्षेत्र में बर्फीली चट्टानें 10 लाख टन प्रतिवर्ष की दर से पिघल रही है। 21वीं सदी के अन्त तक समुद्र तल में 3.5 फीट से लेकर 13 फीट की बढ़ोत्तरी की सम्भावना बन रही है जो ध्रुवीय क्षेत्र की बर्फ के पिघल कर समुद्र में पानी में मिल जायेगी एवं पृथ्वी में ध्रुवीय बर्फ का भार हटकर समुद्र के पानी में क्रमश 397 अरब टन से 1450 अरब टन तक बढ़ा देगा। उपरोक्त कारणों से पृथ्वी का वृत्त का आकार बढ़ जायेगा और पृथ्वी कि घूमने की गति धीमी पड़ जाएगी। जिससे दिन रात का समय बढ़ सकता है और पृथ्वी के घूर्णन कोण 23.43 डिग्री व गति में परिवर्तन हो जायेगा तथा एक दिन ऐसा भी आ सकता है कि सम्पूर्ण सृष्टि का विनाश हो जाय।

अलबर्टा विश्वविद्यालय के शोधकर्ता प्रो. मैथ्यू डर्बी ने भी प्रो. भरत राज सिंह के शोध कार्य की पुष्टि की है कि ध्रुवीय बर्फ के भार में परिवर्तन के कारणों से पृथ्वी की घूर्णन गति धीमी हो सकती है और रात-दिन का समय भी 24 घंटे से अधिक बढ़ सकता है। इसी क्रम में, अमेरिका के खगोल वैज्ञानिक रॉयल ग्रीनविच ने दिन-रात के 0.5 मिलीसेकंड बढ़ने की जानकारी दी है। अतः प्रो. भरत राज सिंह के इस शोध कार्य को अल्बर्टा विश्वविद्यालय तथा नासा ने आगे बढ़ाया। इससे विश्व में भारत के वैज्ञानिक भरत राज सिंह का मूल शोध कार्य होने से भारत का सिर सम्मान से ऊंचा हुआ है तथा पूरी दुनिया में एक सन्देश गया है कि जलवायु परिवर्तन एक अहम् खतरा बन चुका है।

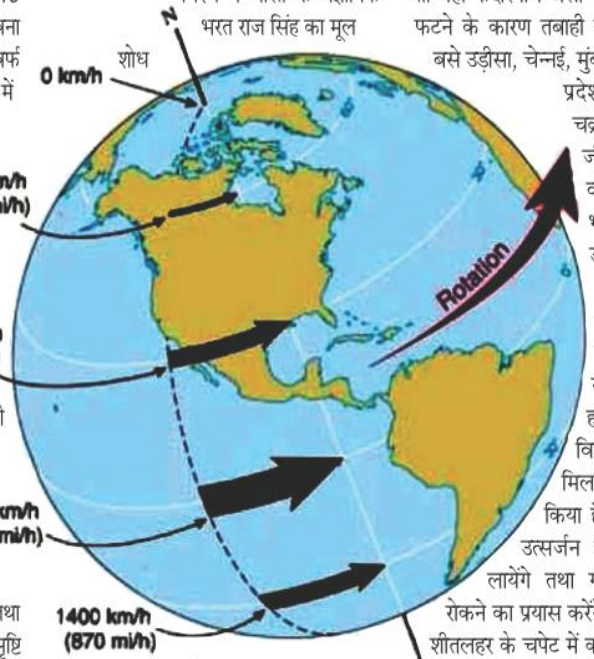


भारत वर्ष भी विभीषिकाओं से अछूता नहीं है क्योकि यह तीन तरफ से समुद्र व एक तरफ हिमालय से घिरा है। इससे समुद्री क्षेत्रों के आस-पास के छेत्र में भीषण बारिश व हिमालय से सटे प्रदेशों में भीषण ठंड व बर्फबारी का प्रकोप बढ़ गया है। विगत कुछ वर्षों में जहां जम्मू-कश्मीर में भयानक बाढ़ की स्थिति बनी तो वहीं केदारनाथ जैसी पहाड़ों में ग्लेश्यिर के फटने के कारण तबाही मची, समुद्र तट पर बसे उड़ीसा, चेन्नई, मुंबई, गुजरात एवं मध्य प्रदेश कुछ भागों में चक्रवाती बारिश ने जन जीवन को अस्त व्यस्त कर दिया। भारत का बेहद उपजाऊ क्षेत्र, उत्तर प्रदेश व बिहार में आगे सूखाग्रस्त होने की संभावनाएं बढ़ रहीं हैं।

हाल में ही पेरिस में विश्व के सभी राष्ट्रों ने मिल कर यह संकल्प किया है कि वे कार्बोन के उत्सर्जन में 2% की कमी लायेंगे तथा ग्लोबल वार्मिंग को रोकने का प्रयास करेंगे। अभी इस वर्ष भी शीतलहर के चपेट में कई प्रदेश विगत 15-20 दिनों से आ चुके है और ठंडक इस वर्ष मार्च/ अप्रैल तक बढ़ने की संभावना से नाकारा नहीं जा सकता है। प्रो. सिंह का कहना है कि अभी भी हम 'जलवायु-परिवर्तन के इस विभिषिका से बच सकते है यदि हम हाइड्रोकार्बन आधारित ऊर्जा प्रणाली के स्थान पर अक्षय ऊर्जा का उपयोग अधिक से अधिक करने की नयी तकनीक लाये। ●